वैदिक साहित्य से वर्तमान तक गाय का महत्व

प्रियंका ओझा [1]

[1] **यूजीसी नेट, इतिहास.**

ABSTRACT:

समूचे वैदिक व उत्तर वैदिक कालीन इतिहास में गाय की महत्ता है, संपूर्ण इतिहास में गाय को विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है। वैदिक समाज गाय को अधन्या, अबध्य मानता है। ऋग्वेद में वह अधन्या है (वध न किए जाने योग्य), सौभाग्य दाहिनी है। वह तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश का केंद्र बिंदु थी लोक जीवन का अभिन्न अंग थी, तभी तो संपूर्ण साहित्य में उसे केंद्रीय स्थान प्रदान किया गया है।

KEYWORDS:

देवोपासना: गव्य उत्पाद और उनका औषधीय महत्व - दयानंद सरस्वती.

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th May 2024	30th May 2024

विषय प्रवेश:

समुद्र मंथन की घटना गाय के निर्माण की कहानी को प्रकाश में लाती है भारतीय समाज में देवोपासना रही है, ऋग्वेद के अधिकांश देवता प्रकृति की शक्तियां हैं। वे दिव्य है। देवता मनुष्य की श्रद्धा है, मनुष्य अपना प्रिय खाद्य ही देवताओं को अर्पित करता है। गोदुग्ध वैदिक समाज का प्रिय पेय है। एक मंत्र में ऋषि अग्नि देव को दूध देना चाहते हैं लेकिन उनके पास अधन्या गाय है नहीं (ऋग्वेद 8.102.19) ऋषि इंद्र कहते हैं- अधन्या अपना दूध तुम्हें देती है। (9.1.9) इंद्र अधन्या रक्षक (8.69.2) है। अधन्या अश्विनी देवों को भी दूध देती है। (1.164. 27) गाये ऋग्वैदिक समाज में ही ऋषित्व की श्रेणी में पहुंच गयी थी। वे सोम की स्तुति करती है। अथर्ववेद में तो वे स्वयं देवता ही है। अथर्ववेद में सुंदर घर की प्रशंसा में कहा गया है कि "हमारे घर में सब तरफ गाये घूमे"। वेदों में घी अग्नि का अन्न है। घी अग्नि देव का प्रिय है, खाद्य है। वैदिक समाज जो खाता था अग्नि को भी जो खिलाता था अर्थात आहुति प्रदान करता था। वे इंद्र को धाना खिलाते थे। धाना अन्न से बना खाद्य है (ऋग्वेद 4.24.7) ऋषि इंद्र से कहते हैं- "प्रतिदिन पधारो धाना खाओ" (ऋग्वेद 3.53.7) खेती के देवता पूषन थे। वे ' करम्भ ' प्रेमी है। करंभ भुना हुआ अनाज था। करंभ इंद्र पूषन सबका प्रिय है मैक्डनल और कीथ ने एक और वैदिक व्यंजन ' पुरोडास' को यज्ञ की रोटी बताया है। ऋषि इंद्र से कहते हैं- "प्रार्थना सुनो, पुरोडास खाओ"। (ऋग्वेद 4.32.16) जो इंद्र को पुरोडास खिलाता है, उसे इंद्र पापों से बचाते हैं (ऋग्वेद 8.31.2) वैदिक समाज का जौ, धाना, करम्भ, अपुप , पुरडास दूध और घी प्रेम चारों वेदों में व्याप्त। गौ मांस का कहीं जिक्र नहीं है। गाऐ श्रद्धा है। अन्न खाद्य है। ऋग्वैदिक देवता बृहस्पति हैं जिन्होंने गायों को आकाश तक चरने भेजा है (ऋग्वेद 2.24.14) मैक्डनल ने लिखा " वह बादलों में जाकर गाय को पुकारते हैं" ऋग्वेद (10.68.12) यह सही है कि गाये आकाश में विचरण नहीं करती लेकिन ऋषि की भाव विहलता उन्हें आकाश तक ले जाती है। ऋषि भारद्वाज द्वारा रचित भजन XXVIII में गाय के गुणों का बखान किया गया है।

ऋग्वेद से लेकर महाभारत और वर्तमान काल तक गाय भारतीय संस्कृति और परंपरा में पूज्य है। अथर्ववेद में वह विराट ब्रह्म है। वह एक सूक्त की देवता भी है - "गाय का ऊपरी जबड़ा द्युलोक है, निचला पृथ्वी, जीभ विद्युत है, दांत मरुदण है, उदर भाग अंतरिक्ष है, दोनों कंधे मित्र और वरुण है आदि"। इससे पहले ऋग्वेद (8.101. 215) में कहते हैं- "यह रुद्रों की माता वसुओ की दुहिता, आदित्यो की बहन तथा अमृत की नाभि है। यह अवध्य है"। थोड़े शब्द बदलकर यही मंत्र अथर्ववेद में भी दोहराया गया है। यजुर्वेद भी गाय की महिमा से भरा पूरा है। आयुर्वेद में गाय को कष्ट पहुंचाने वालों का दंड वर्णित है - जो गाय के कान को पीड़ा देता है वे मानो देवताओं पर प्रहार करते हैं, जो गाय पर परिचय चिन्ह बनाते हैं, उनका धन नष्ट होता है, जो साज सज्जा के लिए गौ बाल काटते हैं इस अपराध कर्म से उनको संतान मृत्यु को प्राप्त होती है, जिस गौपति के सामने कौआ गाय के बाल नोचता है उसकी संताने मर जाती है आदि"। गौ हत्या के बारे में (अथर्व 12.9) में कहा गया है- "गौधाती लोग इस लोक और परलोक दोनों में दंडनीय है।"

तुलसीदास ने श्रीराम जन्म के कारणों में से एक कारण गो संवर्धन बताया- **"विप्रधेनु सुर संतहित लीन्ह मनुज अवतार"** गीता में कृष्ण ने अर्जुन को अपने संपूर्ण रूपों में से एक गाय रूप भी बताया है। कृष्ण गोपाल थे।

हमारे देश में गाय से संबंधित हजारों नाम है- गुवाहाटी, गोरखपुर, गोवा, गोधरा, गोंदिया, गोदावरी, गोवर्धन, गौतम, गोमुख, गोकर्ण, गोयल, गोचर आदि।

वेदों के अनुसार गाय मानव उपयोग के लिए चार उत्पाद प्रदान करती हैं -

1. गोदुग्ध: आयुर्वेद के अनुसार गाय के दूध में वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज और विटामिन बी होता है इनमें मस्तिष्क की कोशिकाओं को पुनर्जीवित करने की क्षमता होती है।

2. गोघृत: आयुर्वेद के अनुसार यह सबसे अच्छा घी है जो कई विकारों में उपयोगी है यज्ञ में यह हवा के ऑक्सीजन स्तर को बेहतर बनाता है।

3. गौमूत्र: गौमूत्र का उपयोग औषधिय परियोजनो के लिए किया जाता था और इसमें कैंसर विरोधी, एंटी फंगल कृषि और अंतिम एक्सीडेंट गुण होते हैं। इसमें प्रतिरक्षा मॉडयूलेटर गुण होते हैं जो इसे प्रतिरक्षा की कमी वाले रोगों के लिए उपयोगी बनाता है। फारसी धर्म में भी गोमूत्र का उपयोग दवा के रूप में किया जाता है।

4. गोमय (गोबर): गाय के गोबर को हर दृष्टि से मूल्यवान माना जाता है इसका उपयोग पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए किया जाता है क्योंकि इसमें रेडियम होता है और यह विकिरण के प्रभावों को रोकता है। गौमूत्र में तांबा होता है औषधिय गुणों के आधार पर मानव शरीर के अंदर सोने में परिवर्तित हो जाता है। गाय के द्वारा प्रदत चारों उत्पादों के उपयोग का समर्थन सबसे पहले चरक संहिता, सुश्रुत, वाग्भट्ट और निघंटु रत्नाकर आदि ने भी किया है वे टिकाऊ कृषि के साथ-साथ बीमारी की रोकथाम के लिए गाय के गोबर और गौमूत्र की उपयोगिता साबित करते हैं।

गाय को गौ माता का दर्जा प्रदान करने के पीछे महत्वपूर्ण तर्क यह हैं कि जन्म देने वाली माता अपने बच्चे को एक या दो वर्ष तक की दूध पिलाती है लेकिन गाय हमें जीवन भर दूध देती है जो अमृत के समान है और मानव का पोषण करती है। जब हम गाय के टखने देखते हैं तो

हम अचानक होने वाली मृत्यु से खुद को बचाते हैं गाय की परिक्रमा करना सभी तीर्थों के दर्शन करने के समान है। जैसे पीपल और तुलसी का पौधा ऑक्सीजन देता है वैसे ही गाय एक मात्र, एक ऐसा पशु है जो वायु को शुद्ध करती है। गाय के सींग और पीठ का कूबड दो शक्तिशाली पिरामिड की तरह है। जिस स्थान पर गाय को बांधा जाता है, वहां कोई वास्तु संबंधी बुरा प्रभाव नहीं होता है, यदि किसी ग्रह का कोई अशुभ प्रभाव है तो गाय को रोटी और गुड़ खिलाने से अशुभ प्रभाव शांत हो जाता है।

गौमूत्र चिकित्सा से वर्तमान समय की असाध्य बीमारियों का सफल इलाज किया जा रहा है। कैंसर से जूझ रहे व्यक्ति हो या मधुमेह के मरीज जो इंसुलिन ले रहे हैं। एड्स, अस्थमा, सोरायसिस, एक्जिमा, रक्तचाप, हृदय रोग, प्रोस्टेट, बवासीर, खांसी, कफ आदि बीमारियां के उपचार में गोमूत्र के सेवन से स्वास्थ्य में काफी सुधार होता है। गौमूत्र, गोबर, दूध, दही, घृत, कुशा के जल को ग्रहण करने से दुस्वप्न नहीं आते हैं। गोग्रास दान से स्वर्ग प्राप्त होता है। परपुरुष की गाय को ग्रास देना स्वर्ग प्राप्त करता है। गौओं का हित करने वाला ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

जिन क्षेत्रों में अधिक गो समुदाय होता है, वहाँ रोग कम पनपते हैं। जिस स्थान पर गाय, बैल, बछड़ा आदि मूत्र का विसर्जन करते हैं, उस स्थान पर दीमक नहीं लगती है। बरसात के दिनों में फसल रहित खेतों में गायों के अधिक घूमने चरने से उन खेतों में रबी की फसल अधिक पैदा होती है और वह फसल रोग रहित होती हैं। जिस भूमि पर गाये नहीं चरती, वहां स्वाभाविक ही है घास का उत्पन्न होना कम हो जाता है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक गाय को भारतीय सभ्यता संस्कृति, कृषि जीवन, पशुपालन आदि में केंद्रीय स्थान प्राप्त रहा है। आधुनिक काल में भारत में गौ संरक्षण के लिए प्रथम प्रेरणा स्वामी दयानंद सरस्वती ने प्रदान की थी। रेवाड़ी (हरियाणा) के शासक युधिष्ठिर सिंह ने स्वामी जी की प्रेरणा से पहली गौशाला रेवाड़ी में 1879 ईस्वी में खोली गई थी। स्वामी जी का गौ प्रेम इस कदर था कि 1882 ईस्वी में पहली गौरक्षणी सभा की स्थापना 1882 ईस्वी में पंजाब में की गई थी, इन सभा का उद्देश्य था - गाय को बचाने के नाम पर हिंदुओं को एकजुट करना। स्वामी जी ने "गोकरुणा निधि" नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में गौमाता की रक्षा, कृषि में उनके सहयोग, उनसे मिलने वाले लाभ, गोबर-गोमूत्र का उपयोग आदि का वर्णन किया गया है ताकि लोगों में जागरूकता फैले एवं गो हत्या रुके। उन्होंने इस पुस्तक में अन्य जीवों की हत्या न करने और शाकाहरी भोजन अपनाने की प्रेरणा दी है।

सर्वोदयी नेता विनोबा भावे ने गौ रक्षा के लिए अपनी आवाज उठाई थी। गांधी जी ने गाय को "दया की कविता कहा और उसे भारतीय संस्कृति का प्रतीक माना जो इसे महान सत्य" को व्यक्त करती है कि मनुष्य और गैर-मानव प्राणी एक ही है। उन्होंने कहा कि गाय सबसे शुद्ध प्रकार का उप-मानव जीवन है। वह हमारे सामने पूरी उप मानव प्रजाति की ओर से मनुष्य के हाथों न्याय के लिए विनती करती है, जो सभी जीवित प्राणियों में सबसे पहले है गांधी जी ने हिंदुओं की गहरी भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त किया "गौ रक्षा दुनिया को हिंदू धर्म की देन है। और हिंदू धर्म तब तक जीवित रहेगा जब तक गाय की रक्षा करने वाले हिंदू हैं"। उन्होंने कहा कि अगर कोई मुझसे पूछे कि हिंदू धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति क्या है, तो मैं सुझाव दूंगा कि यह गोरक्षा का विचार है। संविधान के अनुच्छेद 48 के तहत गाय को संरक्षण प्राप्त है, जिसके अनुसार राज्य को गाय और मवेशियों के वध पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

निष्कर्ष:

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक गाय भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग रही है उसे न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि धार्मिक दृष्टि से भी उपयोगी माना है तथा उसके संरक्षण के लिए प्रयास किए गए हैं।

REFERENCES

1. डॉ. राजबहादुर पाण्डेय : ऋग्वेद भाग (1,2,3)
2. डॉ. गंगा सहाय शर्मा – अथर्ववेद
3. डॉ रचना तिवारी - वैदिक संस्कृति में गोधन
4. डॉ दयाशंकर त्रिपाठी- वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विज्ञान
5. विश्वनाथ टंडन- सिलेक्शन फॉर्म विनोबा
6. महात्मा गांधी - गाय की सेवा कैसे करें